रूस हिंद महासागर की ओर

लेखक - सी. राजा मोहन (निदेशक, इंस्टीट्यूट ऑफ साउथ एशियन स्टडीज, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

इंडियन एक्सप्रेस

26 नवंबर, 2019

"दिल्ली को मॉस्को के साथ मिलकर चीन-रूस की नौसैनिक साझेदारी पर जोर देने की जरूरत है।"

लंबे समय तक हिंद महासागर के भू-राजनीति के लिए सीमांत के रूप में देखा जाने वाला रूस, अब फिर से प्रमुख शक्ति के साथ यह विवादास्पद समुद्र-तट में शामिल हो रहा है। हाल की तीन घटनाओं ने हिंद महासागर में रूस के बढ़ते रणनीतिक हित को उजागर किया है और इसलिए भारत की अपनी क्षेत्रीय रणनीति के लिए इसके परिणामों के बारे में सोचने के लिए दिल्ली को मजबूर होना चाहिए। पिछले हफ्ते, रूसी नौसेना का एक प्रशिक्षण पोत पेरेकोप, श्रीलंका के हंबनटोटा बंदरगाह पर पहुँचा था। पिछले महीने के अंत में रूसी लंबी दूरी के 'ब्लैक जैक' परमाणु बमवर्षकों ने दक्षिण अफ्रीका के लिए उड़ान भरी। यह पहली बार है जब इन विमानों को अफ्रीका में तैनात किया गया है।

इस हफ्ते केप ऑफ गुड होप से रणनीतिक जल में रूसी और चीनी दक्षिण अफ्रीका के साथ त्रिपक्षीय नौसैनिक अभ्यास कर रहे हैं। इसका नाम मोरिस दिया गया है और यह पहली बार है कि तीन देश (ब्राजील के साथ ब्रिक्स मंच पर भारत के साझेदार) इस तरह का संयुक्त अभ्यास कर रहे हैं।

यह अभ्यास दक्षिण अफ्रीका की सुरक्षा गणना में चीन और रूस के बढ़ते वजन और पश्चिम से प्रिटोरिया की बढ़ती राजनीतिक दूरी को दर्शाता है। इस बीच ईरान ने कहा है कि वह फारस की खाड़ी के विवादास्पद समुद्र क्षेत्र में रूस और चीन के साथ संयुक्त नौसैनिक अभ्यास आयोजित करने की योजना बना रहा है।

अब तक हिंद महासागर पर दिल्ली की बातचीत चीन के साथ बढ़ती प्रतिस्पर्धा पर केंद्रित रहा है, जिसका समुद्री प्रोफाइल समुद्री क्षेत्र में बढ़ रहा है। इसके परिणामस्वरूप संयुक्त राज्य अमेरिका और जापान के साथ-साथ इंडोनेशिया, सिंगापुर, पूर्व में अन्य आसियान देशों और खाड़ी के साथ-साथ कई देशों में अफ्रीका का पूर्वी तट पर भारत के नौसैनिक सहयोग का तेजी से विस्तार हुआ है।

अभी हाल ही में भारत फ्रांस के साथ एक साझेदारी विकसित कर रहा है, जो कि समुद्री तटों में एक निवासी शक्ति और पश्चिमी हिंद महासागर और अफ्रीका में एक पारंपरिक सुरक्षा प्रदाता है। भारत भी ब्रिटेन और यूरोपीय संघ के साथ इसी तरह की गहन भागीदारी विकसित करना चाहेगा।

हिंद महासागर में रूस की वापसी अपेक्षाकृत हाल ही में हुई है। इसे मध्य पूर्व और अफ्रीका में अपनी नई रणनीतिक सक्रियता के हिस्से के रूप में भी देखा जाना चाहिए। पाँच दशक पहले एक उभरते हुए सोवियत रूस ने स्वेज के पूर्व से ब्रिटिश वापसी के बीच हिंद महासागर में प्रवेश करने की मांग की।

हिंद महासागर के क्षेत्र को शांत बनाने के लिए अधिक ध्यान नहीं दिया गया क्योंकि अमेरिका ने ब्रिटेन को जल्द ही मुख्य सुरक्षा प्रदाता के रूप में प्रतिस्थापित किया। सोवियत संघ ने भी 1970 और 1980 के दशक के दौरान हिंद महासागर में अपने सामरिक पदचिह्न का विस्तार किया लेकिन सोवियत संघ के पतन ने मास्को के हिंद महासागर प्रक्षेप वक्र को बाधित कर दिया।

चूँकि यह हिंद महासागर में वापस लौट रहा है, रूस की महत्त्वाकांक्षाओं पर कई बुनियादी बाधाएँ बनी हुई हैं। रूस एक विशाल महाद्वीपीय देश है और समुद्र तक इसकी सीमित पहुँच इसके विरोधियों द्वारा शोषण की चपेट में रहती है।

अप्रचलित आर्कटिक रूस के लिए नए अवसर पेश करेगा, लेकिन उनमें से अधिकांश दीर्घकालिक हैं। रूस अपने सीमित आर्थिक संसाधनों से भी विवश है। चीन, जापान, यूरोप और अमेरिका की आर्थिक स्थिति इस क्षेत्र के लिए बेहतर है। हिंद महासागर निश्चित रूप से मास्को की समुद्री प्राथमिकताओं में सबसे ऊपर नहीं है।

फिर भी रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने सबसे बेहतर बनने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति और रणनीतिक कौशल का प्रदर्शन किया है। हालाँकि रूसी हिंद महासागर में कभी हावी नहीं हो सकते लेकिन निश्चित रूप से उनमें इस क्षेत्र में रणनीतिक परिणामों को आकार देने की क्षमता है।

जिसका पहला कारण है कि, मास्को दुनिया के प्रमुख हथियारों के निर्यातकों में से एक है और इसी चीज ने इसे हिंद महासागर क्षेत्र में प्रभावी बना दिया है। दूसरा, बशर अल असद शासन को बचाने में सीरिया में रूस के सैन्य हस्तक्षेप की सफलता ने नागरिक युद्ध से निपटने के लिए संघर्षरत कई देशों का ध्यान आकर्षित किया है। मध्य अफ्रीकी गणराज्य लीबिया और मोजाम्बिक में रूस की बढ़ती सुरक्षा भूमिका पर हालिया रिपोर्ट – जिसमें हाइब्रिड बलों का उपयोग शामिल है – इसके प्रमाण हैं।

तीसरा, रूस विशेषाधिकार प्राप्त सैन्य पहुँच हासिल करने के लिए इस क्षेत्र में अपनी नई सुरक्षा भूमिका का उपयोग कर रहा है। हालाँकि हिंद महासागर में इसका कोई नौसैनिक अड्डा नहीं है लेकिन किसी एक को प्राप्त करना शायद इसकी एक उच्च प्राथमिकता होगी। इस बीच रूस ने इस क्षेत्र में अपनी नौसेना की कूटनीति को आगे बढ़ाया है, इस क्षेत्र में बंदरगाहों का नियमित दौरा कर रहा है और विशेष रिश्तों को गहरा कर रहा है जो पहले से ही भारत जैसे देशों के साथ हैं।

चौथा एक स्थायी सदस्य के रूप में, रूस मानवाधिकारों जैसे मुद्दों पर पश्चिमी दबावों के खिलाफ UNSC में कई शासनों के लिए राजनयिक संरक्षण भी प्रदान करता है। आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने के सिद्धांत के लिए मास्को का मजबूत समर्थन कई अफ्रीकी देशों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। अंत में, रूसी ऊर्जा और खनिज कंपनियाँ, लिटोरल के कई हिस्सों में संसाधन विकास के लिए महत्त्वपूर्ण विकल्प प्रदान करती हैं।

हिंद महासागर में रूसी सक्रियता क्षेत्र में उभरती बहुध्रुवीयता के लिए एक स्वागत योग्य होना चाहिए। लेकिन ऐसी चुनौतियाँ हैं, जिन पर दिल्ली में पर्याप्त बहस नहीं होती है। पश्चिम के साथ मास्को के गहरे तनाव और बीजिंग के बढ़ते रणनीतिक आलिंगन भारत की अपनी रणनीति के लिए समस्याएँ खड़ी करते हैं।

मॉस्को से एस-400 मिसाइलों की दिल्ली की खरीद और वाशिंगटन के प्रतिबंधों के परिणामस्वरूप खतरे के मामले में अमेरिका के साथ रूस के संघर्ष का प्रभाव सार्वजनिक रूप से सामने आया है लेकिन उभरते हुए चीन-रूस नौसैनिक और समुद्री भागीदारी के निहितार्थ पर बहुत कम ध्यान केंद्रित किया गया है।

पिछले कुछ वर्षों में चीन और रूस ने पश्चिमी प्रशांत, बाल्टिक सागर और भूमध्यसागर में प्रभावशाली नौसैनिक युद्धाभ्यास किया है। इस सप्ताह दक्षिण अफ्रीका के साथ संयुक्त अभ्यास भारत के लिए घनिष्ठ चीन-रूस नौसैनिक साझेदारी को करीब लाता है। दिल्ली को चीन के साथ अपने हिंद महासागर सहयोग पर मॉस्को के साथ एक प्रारंभिक और गहन वार्ता की आवश्यकता है।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. **मोसी (MOSI) नौसेना अभ्यास के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. यह रूस, भारत और दक्षिण अफ्रीका का संयुक्त नौसेना अभ्यास है।
2. यह अभ्यास नौवहन और समुद्री आर्थिक गतिविधियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए किया जा रहा है।
3. दक्षिण अफ्रीका की नौसेना इस बहुदेशीय समुद्री सैन्याभ्यास की मेजबानी केपटाउन में कर रही है।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सत्य हैं?

(a) 1 और 2
(b) 2 और 3
(c) 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

Expected Questions (Prelims Exams)

1. **Consider the following statements in the context of MOSI Naval Exercise-**

1. It is a joint naval exercise of Russia, India and South Africa.
2. This exercise is being done to ensure the safety of shipping and maritime economic activities.
3. This exercise is being done to ensure the safety of shipping and maritime economic activities.

Which of the above statements are correct?

(a) 1 and 2 (b) 2 and 3
(c) 1 and 3 (d) 1, 2 and 3

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: हाल ही में रूस की हिन्द महासागर में बढ़ती गतिविधियों को देखते हुए क्या भारत को रूस-चीन के साथ एक नौसैनिक साझेदारी की दिशा में बढ़ना चाहिए? चर्चा कीजिए। (250 शब्द)

Recently, seeing increasing activities of Russia in the Indian Ocean, should India move towards a naval partnership with Russia-China? Discuss

नोट : 25 नवम्बर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1 (b) होगा।

Comm